P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

डॉ. राजकुमार 'निजात' की कहानियों में व्यक्त कुण्ठा एवं अंतर्द्वन्द्व

सुखप्रीत कौर
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
गुरूकाशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा

कविता चौधरी
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
गुरूकाशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा

सारांश

राजकुमार 'निजात' की कहानियों में कुण्ठा और अंतर्द्वन्द्व का गहरा संबंध देखने को मिलता है। 'सलवटें' कथा संग्रह में दस कहानियाँ हैं – एक परिचय : एक सम्बन्ध, उस रात तक, तृप्ति, आहत, तीन इक्के, मैं हैरान हूँ, खत, अपनत्व, आवाजें और उपासना। इस कथा संग्रह की रचनाओं के माध्यम से लेखक ने युवामन में पनप रही कुण्ठाओं को अभिव्यक्ति की है, जो विभिन्न घटनाओं का संस्पर्श पाकर प्रतिक्रिया स्वरूप जीवंत रूप लेकर हमारे सामने आती हैं। 'अचानक' कथा संग्रह में नौ कहानियाँ हैं– अचानक, वर्षगांठ, दूसरी नींव, अहसास, पाँचवां–आदमी, अन्तर, व्यस्त, देबू चाचा, फिसलन। इस कथा संग्रह की कहानियों में लेखक ने अपने आस–पास के परिवेश में जो कुण्ठित भाव देखा जाना और परखा है उसे पूरी ईमानदारी के साथ चित्रित करने की कोशिश की है।

इनके पात्र विभिन्न प्रकार के मानसिक संघर्षो में से गुजरते हैं जिसमें से कुछ जीवन में आगे बढ़ जाते हैं लेकिन कुछ इनसे उबर नहीं पाते और जीवन को समाप्त कर लेते हैं। 'फिसलन' कहानी की पात्र नंदिनी पति द्वारा किए जाने वाले कटाक्षों को झेलती है। मनोवैज्ञानिक धरातल पर एक असहाय पत्नी प्रत्यक्ष में पति को कुछ नहीं कह पाती तो उससे संबंधित चीजों पर अपना गुस्सा निकालकर अपने मन की भड़ास निकालती है। 'अहसास' कहानी में आर्थिक रूप से कमज़ोर होने पर उत्पन्न होने वाली कुण्ठा और साथ ही पति–पत्नी के बीच शारीरिक संबंध बनाने को लेकर पैदा होने वाली मानसिक कुण्ठा और अंतर्द्वन्द्वों को दिखाया है। 'उस रात तक' कहानी इस तथ्य को सत्य सिद्ध करती है–मनोवैज्ञानिक धरातल पर देखा गया है कि जब किसी व्यक्ति विशेष की एक ऐसी इच्छा जिसे वह हर हाल में पाना चाहता है वह पूर्ण नहीं होती तो व्यक्ति आत्महत्या की सोच लेत है। इस कहानी के पात्र अजन और नीला का भी यही अंत होता है। 'सलवटें' कहानी में निजात ने जमनी और अफसद मानसिक अंतःद्वन्द्वों, यादों और आर्कषण का सजीव चित्रण किया हैं। अफसद के माध्यम से ग्राह्य परिहार अंतःद्वन्द्वों को दिखाया है। जिसमें व्यक्ति दो या दो से अधिक एक जैसे प्रबल सकारात्मक तथा प्रलोभनों में से किसी एक का चयन करने का संकट खड़ा हो जाता है। अफसद जमनी को देखना चाहता है उससे बात करना चाहता है लेकिन उसे डर है कि जमनी उसका क्या उत्तर देगी।

राजकुमार निजात के शब्दों में – ''कहानी को मैं साहित्य की सबसे सर्वोतम, महत्त्वपूर्ण व लोकप्रिय विधा मानता हूँ। वास्तव में इसके माध्यम से हम जीवन के विभिन्न पक्षों की पहलुओं की व्याख्या कर सकते हैं। विशेषकर नारी पात्र को लेखक की मानुषिक इच्छा, चेतना, वासना, क्रीड़ा का शिकार नहीं होना पड़ता। इसमें नारी सौन्दर्य को कला एवं सौन्दर्य की दृष्टि से पूर्ण सम्मान मिलता है । यहाँ लेखक नारी पात्र के सौन्दर्य का विश्लेषण करता है पर उपभोग नहीं। उसका परिचय तो कराता है पर शोषण नहीं करता। व्यक्ति की इच्छा और स्वार्थ को लेखक की रचनात्मक शक्ति की भेंट नहीं चढ़ना पड़ता। मैं इस धारा का पक्षधर हूँ कि विचारों का प्रदर्शन हो पर उनका दोहन न हो।''

मुख्य शब्द : राजकुमार निजात, गजल, मनोविज्ञान।

प्रस्तावना

ऐसी स्थिति जिसमें कोई असुरक्षित और निराश महसूस करता है। सभी व्यक्तियों में अपने जीवन में कुछ करके आगे बढ़ने की इच्छा होती है, बहुत सी महत्त्वाकांक्षाओं से वह घिरे रहते हैं। इन इच्छाओं को पूरा करने के लिए वह जीवन में संघर्ष करते हैं। परन्तु अच्छी योजना बनाकर कार्यपथ पर जोर–शोर से आगे बढ़ने पर भी वह व्यक्ति अपनी इच्छा को पूरा नहीं कर पाता। उसे अपने

अपने प्रत्यनो में हर तरह से विफलता ही मिलती है, उसे कोई आशा की किरण दिखाई नहीं पड़ती। यह विफलता उसे उस हालात में लाकर खड़ा कर देती है जिसे मनोविज्ञान की भाषा में कुण्ठा की स्थिति से संबोधित किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य मनुष्य के कुण्ठा, अंतर्द्वन्द्व और मनुष्य के आस–पास की घटनाएं जिन पर वह अपनी अक्रोशित प्रतिक्रिया को दिखाता है उसको दिखाना है।

गुड

"कुण्ठा से अभिप्राय किसी भी इच्छा या आवश्यकता की पूर्ति में आने वाली बाधा से उत्पन्न संवेगात्मक तनाव है।"

केरौल

कुण्ठा को किसी भी अभिप्रेरक की सुतुष्टि में आने वाली बाधा के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली स्थिति या परस्थिति के रूप में जाना जा सकता है।"

कुण्ठा के उत्पन्न होने के कारण

बाह्य कारक

1. भौतिक कारक किसी व्यक्ति विशेष के जीवन को प्रभावित करते हैं जैसे कोई प्राकृतिक आपदा आए या ऐसी वातावरणजन्य परिस्थितियाँ जो व्यक्ति को तोड़ कर रख दे, व्यक्ति में आशा को ही खत्म कर दे तो फिर व्यक्ति कुण्ठा का शिकार हो जाता हैं।
2. कुण्ठा सामाजिक कारक से भी उत्पन्न होती है। जिसमें किसी व्यक्ति विशेष के साथ किया जाने वाला व्यवहार होता है उदाहरण के लिए एक बालक उस समय कुण्ठा का शिकार हो जाता है जब उस पर अनावश्यक कठोर नियंत्रण लगा दिया जाता है।
3. कुण्ठा का शिकार व्यक्ति तब भी हो जाता है जब वह आर्थिक रूप से कमजोर हो जाता है आर्थिक अभावों से तंग आकर कई बार वह आत्महत्या भी कर लेता है।

आन्तरिक कारक

1. किसी शारीरिक दोषों के कारण, चेहरे की करूपता या बहुत मोटा या पतला होना किसी उस व्यक्ति विशेष के कुण्ठाग्रास होने का बड़ा कारण सिद्ध हो सकता है।
2. किसी व्यकित विशेष किसी इच्छा का पूरा न होना, महत्वकांक्षा का स्तर बहुत ऊँचा होनाया अंतःद्वन्द्वता के फलस्वरूप भी कुण्ठा का शिकार हो जाता है।

अंतःद्वन्द्व का अर्थ

द्वन्द्व तथा संघर्ष शब्द का प्रयोग हम अपनी ज़िदगी में कई रूपों से करते है। किन्ही दो संस्कृतियों, धर्मों और समुदायों आदि के बीच संघर्ष की अनेक परिस्थितयाँ पैदा हो सकती है। यह प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने वाला बाह्य द्वन्द्व होता है। कुछ ऐसे द्वन्द्व एवं संघर्ष भी होते हैं जिन्हें व्यक्ति विशेष आंतरिक रूप से झेलते हैं। अपने मन में चल रहे इन द्वन्द्वों का जिन्होंने अंतः द्वन्द्वों की संज्ञा दी जाती है। व्यक्ति की इच्छा, क्रिया, धारणा बुद्धि ही परिस्थिति और परिवेश से असामंजस्य की स्थिति में द्वन्द्व की सृजना करती है। मनुष्य का मानस पटल ही द्वन्द्व का उद्‌गम स्त्रोत है।

डगलस एवं हौलेन्ड

"अतः द्वन्द्व एक ऐसी पीड़ादायक संवेगात्मक अवस्था है जो एक दूसरे को काटने वाली और विरोधी इच्छाओं से उत्पन्न तनाव के कारण अस्तित्व में आती है।"

बरने एवं लेहनर

"मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व तनाव की वह अवस्था है जो व्यक्ति विशेष में उपस्थित दो या दो से अधिक विरोधी इच्छाओं के फलस्वरूप प्रकाश में आती है।"

राजकुमार 'निजात' का साहित्य आम जन मानस की मूल संवेदनाओं को व्यक्त करने वाला है, इनके साहित्य में प्रेम, कुण्ठा और अंतःद्वन्द्वता का गहरा सम्बन्ध देखने को मिलता हैं। राजकुमार 'निजात' के साहित्य में मानसिक अंतसंघर्षों का विविध रूपात्मक चित्रण हुआ है जिनको भारतीय चिंतन तथा पाश्चात्य मनोविज्ञान में अभिव्यक्त अंतर्द्वन्द्वों के स्वरूप के आधार पर यथेष्ट सफलतापूर्वक परीक्षित किया जा सकता है। 'फिसलन' कहानी में कुण्ठाओं का चित्रण नन्दिनी और मनीष के माध्यम से किया गया है। जिसमें पति–पत्नी के आपसी सम्बन्धों में संदेह ने दरार डाल दी है। विवाह के संबंध में पति और पत्नी दोनों ही एक दूसरे से प्रेम और समर्पण चाहते हैं लेकिन यदि जो चीज नहीं होती उसके होने के बारे में बार–बार कटाक्ष किया जाए तो वह चीज हार कर वहीं बन जाती हैं। नन्दिनी जैसी पवित्रता पर मुनीष जैसे पति ने व्यर्थ संदेह करके इस व्रत को खण्डित होने की दिशा में अग्रसर किया–

> "प्यालों को देखकर वह गुर्राया–मैं पूछता हूँ थोड़ी देर पहले कौन आया था?
>
> ××××××××××××××××××
>
> तुम झूठ बोल रही हो। तुम... बताओं कौन आया था ?....हमीद आया था? या गरीश आया था? मुझे सब मालूम है कौन आया गया है?

मुनीष के मुँह से दो बिल्कुल नए नाम सुनकर वह ठिठक गई। हमीद! गिरीश!! उसके मन में तेजी से गोलाकर व्यूह बनने लगे।"

यह सब बातें नन्दिनी को मानसिक रूप से कुंठित करती हैं। मनोवैज्ञानिक धरातल पर एक असहाय पत्नी प्रत्यक्ष में पति को कुछ नहीं कह पाती तो उससे संबंधित चीजों पर अपना गुस्सा निकालकर अपने मन की भड़ास निकालती है। नंदिनी भी चाहकर कुछ नहीं कर पाती वह अपने मन को संतुष्टि करने के लिए मनीष की चीजों पर अपना गुस्सा निकालती है।

"अपने छः माह के जीवन को उसने गौर से देखा। सुबकते–सुबकते उसका चेहरा लाल हो गया। फर्श पर पड़ी मुनीष की चप्पलों की जोड़ी को उसने ठोकर लगाई जो मेज के नीचे कही छिप गई। ऐसा करके उसे आत्म संतुष्टि का अनुभव हुआ मेज पर पड़ी मुनीष की एक कलाई घड़ी उसने पलंग पर पटक मारी। जैसे कि वह अपना सीधा गुस्सा मुनीष पर ही उतार रही हो।"

इस कहानी की पात्र नंदिनी के माध्यम से राजकुमार 'निजात' ने महिला की कुण्ठा को दिखाया है

जो अपने पति के घर में अनेक सपनें देखती है पति प्रेम चाहती है लेकिन पति का व्यवहार उसे कुणठित कर देता है। निजात ने यह भी दिखाया है कि जब किसी को अधिक दबाया जाता है तो सहन शक्ति सीमा आने तक विस्फोट हो जाता है। प्रतिशोध की भावना समतल पर चलने वाले पाँवों को 'फिसलन' भरी ढ़लान की ओर ले जाती है।

'अहसास' कहानी में भी राजकुमार 'निजात' ने मानसिक कुण्ठओं को दिखाया है। जिसमें एक तरफ तो अहसास कहानी की पात्र शिखा के पिता के माध्यम से आर्थिक रूप से कमज़ोर होने पर उत्पन्न होने वाली कुण्ठा को दिखाया है। शिखा के पिता चार बेटियों की शादी के बाद कर्ज के बोझ से इतना दब जाते हैं कि वह गाँव को छोड़ कर ही चले जाते हैं। तो दूसरी तरफ युवा धड़कनों की कुण्ठाएँ हैं। जिसमें एक तरफ शिखा है जो गौने होने के पश्चात् भी समर्पण करने से झिझकती है और पति मनहर कुछ दूसरा अर्थ लेकर तना–तना सा रहता है।

"पति से मिलन स्पर्श का भय और पीहर के प्यार ने शिखा के नूतन जीवन में एक उथल–पथल सी पैदा कर दी। पति उससे प्यार बांटना चाहता था। उसे चाहने लगा था। लेकिन शिखा ने महसूस किया जैसे उसका पति एक लुटेरा है। उसके यौवन का लुटेरा। मगर शिखा कभी चाहकर भी समर्पण नहीं कर सकी। वह इस पशोपेश में उलझी सी रहती।"

राजकुमार 'निजात' ने दिखाया है कि दोनों युवा मनों के अधूरे मिलन व अतृप्त प्यास की अनुभूति उन दोनों के लिए कम जानलेवा नहीं है। साथ ही निजात की इस कहानी में शिखा के मन में चल रहे अंतःद्वन्द्व को दिखाया गया है जिसमें दो विरोधी इच्छाओं को देखा जा सकता है इसमें एक तरफ शिखा का मायके जाने की इच्छा अपने माँ–बाप से लगाव तो साथ ही दूसरी तरफ मनहर के घर को छोड़कर जाने का दर्द–"मैं कहूँ भी तो क्या ? तुम सुनना चाहोगे तब भी नहीं सुन सुकोगे। पति का घर कौन नहीं चाहती। पति के घर रहने का अर्थ यह तो नहीं कि पीहर के नातों को ही दफना दिया जाए? बहुत कोशिश की कि आपसे न छुपाऊँ।"

'उस रात तक' कहानी में भी निजात ने दो प्रेमिओं के अधूरे मिलन को दिखाया है कि किस प्रकार वह मजबूर होती है कि सामान्य नारी की भांति कुछ कर भी नहीं सकती थी। 'मुझे समय ही नहीं दिया गया कि मैं उस दीवार को तोड़ सकती। ये सीमा लांघ सकती'। मनोवैज्ञानिक धरातल पर देखा गया है कि जब किसी व्यक्ति विशेष की एक ऐसी इच्छा जिसे वह हर हाल में पाना चाहता है वह पूर्ण नहीं होती तो वह मानसिक तनाव में आकर आत्महत्या करने की भी सोच लेता है। कहानी के पात्र भी अजन और नीला दोनों एक दूसरे से शादी नहीं कर पाते और नीला किसी और से शादी नहीं करना चाहती वह मजबूर होकर आत्महत्या कर लेते हैं।

'सलवटें' कहानी में निजात ने जमनी और अफसद मानसिक अंतःद्वन्द्वों, यादों और आर्कषण का सजीव चित्रण किया हैं। अफसद के माध्यम से ग्रह्म परिहार अंतःद्वन्द्वों को दिखाया है। जिसमें व्यक्ति दो या दो से अधिक एक जैसे प्रबल सकारात्मक तथा प्रलोभनों में से किसी एक का चयन करने का संकट खड़ा हो जाता है। अफसद जमनी को देखना चाहता है उससे बात करना चाहता है लेकन उसे डर है कि जमनी उसका क्या उत्तर देगी।

"उसका जी चाहा की वह एक बार उससे बात करे। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका। कर भी नहीं सकता था। जमनी ने उसे मना जो कर दिया था। एक आह उसके कलेजे से उठकर उसके होंठ के नीचे आकर दब गई।"

जमनी के सेठ द्वारा जमनी को अपने संग रखने और पैसे देने की बात जब वह अफसद को बता देती है तो अफसद गुस्से में आ उसका मन होता है कि वह सेठ को मार दे लेकिन जमनी के कहने पर तब तो वह ऐसा नहीं करता लेकिन उसके मन का द्वन्द्व उसे चैन से नहीं बैठने देता उसके अंर्त मन में वहीं बातें घूमती है और एक दिन जाकर सेठ को मार देता है।

> "जमनी ने पुनः महसूस किया की वह
> स्थिर नहीं था।× × × × × × × × ×
> × × × × × × × × × × × 'नहीं मेरा
> दिल डर रहा है। साफ–साफ कहों क्या
> बात है? जमनी ने विनय किया।
> 'तेरे सेठ की मैंने छट्टी कर दी है।'
> हिचकिचाहट में मुस्कुराहट बटोरते हुए
> वह बेपर्दा हो गया।"

निष्कर्ष

राजकुमार निजात की कहानियों के पात्र अपने जीवन से जूझ रहे हैं कही पर उनके पात्र इच्छाओं को पूरा न होने पर आत्महत्या कर लेते हैं तो कहीं वह मानसिक कुंठा का शिकार हो रहे हैं। जिनका प्रभाव उनके रिश्तो में देखा जा सकता है, तो कुछ ऐसे पात्र भी हैं जो परिस्थितियों से समझौता कर लेते है।इस कहानी का पात्र अफसद अपने अंर्तद्वंद में सही निर्णय नहीं कर पाता और सेठ की हत्या कर देता है जिसकी सजा जिंदगी भर भोगता है। निजात की यह सभी कहानियां पात्रों के आंतरिक मनोवेगों को प्रदर्शित करती हैं जीवन के उतार–चढ़ाव, ठहराव–पड़ाव और रूकते चलते आयामों को छूती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *'निजात' राजकुमार– कहानी संग्रह 'सलवटें' कहानी 'सलवटें', पृ. 38,*
2. *राज पब्लिशिंग हाऊस 6/5123,दिल्ली*
3. *'निजात' राजकुमार – कहानी संग्रह 'सलवटें' कहानी 'उस रात तक', पृ.54*
4. *राज पब्लिशिंग हाऊस 6/5123,दिल्ली*
5. *'निजात' राजकुमार – कहानी संग्रह 'अचानक' कहानी 'फिसलन' पृ. 36*
6. *पंचम पब्लिकेशन्स, दिल्ली 110083*
7. *'निजात' राजकुमार– कहानी संग्रह 'अचानक' कहानी 'अहसास' पृ. 81,*
8. *पंचम पब्लिकेशन्स, दिल्ली 110083*
9. *मंगल एस. के. – शिक्षा मनोविज्ञान पृ. 586, 591*
10. *PHI Learing Private Limited , Delhi 110092, 2014*
11. *https://www.thewisedictionary.com*
12. *http://hdi.handle.net/10603/135028*
13. *http://hi.m.wikipedia.org>wiki>*